1 कुरिन्थियों अध्याय 14

रविवार, 17 नवम्बर 2019

अध्याय 12 में आत्मा के वरदानों और विश्वासियों के कार्यों की समझ को प्रस्तुत करने के बाद, और उसके बाद यह उपदेश देने के बाद, कि सब कुछ प्रेम के द्वारा निर्देशित और प्रेरित होकर किया जाए, प्रेरित पौलुस अब सभाओं में इन वरदानों के उचित और व्यवस्थित उपयोग के विषय में चर्चा करते हैं।

अन्य भाषाओं और भविष्यद्वाणी के लाभ (14:1-5)

1 प्रेम का अनुकरण करो, और आत्मिक वरदानों की भी धुन में रहो, विशेष करके यह कि भविष्यद्वाणी करो।
2 क्योंकि जो अन्य भाषा में बातें करता है वह मनुष्यों से नहीं परन्तु परमेश्वर से बातें करता है; इसलिये कि उसकी बातें कोई नहीं समझता, क्योंकि वह भेद की बातें आत्मा में होकर बोलता है।
3 परन्तु जो भविष्यद्वाणी करता है, वह मनुष्यों से उन्नति और उपदेश और शान्ति की बातें कहता है।
4 जो अन्य भाषा में बातें करता है, वह अपनी ही उन्नति करता है; परन्तु जो भविष्यद्वाणी करता है, वह कलीसिया की उन्नति करता है।
5 मैं चाहता हूँ कि तुम सब अन्य भाषाओं में बातें करो परन्तु इससे अधिक यह चाहता हूँ कि भविष्यद्वाणी करो: क्योंकि यदि अन्य भाषाएँ बोलनेवाला कलीसिया की उन्नति के लिये अनुवाद न करे तो भविष्यद्वाणी करनेवाला उससे बढ़कर है।

- **वचन 1:**

प्रेम का अनुकरण करो, और आत्मिक वरदानों की भी धुन में रहो, विशेष करके यह कि भविष्यद्वाणी करो।

सभी विश्वासियों को "प्रेम का अनुसरण" करना है।
इसलिए इस वचन का शेष भाग भी सभी विश्वासियों के लिए है।
सभी विश्वासियों को आत्मिक वरदानों की लालसा रखनी है, विशेषकर भविष्यद्वाणी करने की।

पौलुस कहता है, "आत्मिक वरदानों की लालसा रखो।" यहाँ इस बात पर कोई रोक नहीं है कि कितने या कौन-से वरदान। इसलिए हम यह कहते हैं कि आत्मा के सभी नौ वरदान सभी विश्वासियों के लिए उपलब्ध हैं। हम इस अध्याय में "सब" शब्द का बार-बार उपयोग देखते हैं, जो इस बात की पुष्टि करता है कि सभी वरदान सभी विश्वासियों के लिए उपलब्ध हैं।

- **वचन 2-4:**

इन वचनों में हम व्यक्तिगत उपयोग (एक व्यक्तिगत प्रार्थना भाषा के रूप में) में अन्य भाषाओं और भविष्यद्वाणी के लाभों का तुलनात्मक अध्ययन देखते हैं।

अन्य भाषाओं में प्रार्थना / बोलना आपको भेद की बातें प्रार्थना करने में सक्षम बनाता है, अर्थात वे बातें जिनका ज्ञान आपके मन में नहीं होता। यह हमारी प्रार्थना-जीवन को असीमित बना देता है। अन्य भाषाओं में प्रार्थना / बोलना आपको आत्मिक रूप से उन्नत करता है—आपको आत्मिक रूप से बनाता और दृढ़ करता है।

भविष्यद्वाणी लोगों के लिए उन्नति, उपदेश और शान्ति लाती है और कलीसिया की उन्नति करती है।

[अन्य भाषाओं में प्रार्थना करने के लाभों पर और अधिक जानकारी के लिए कृपया APC की निःशुल्क पुस्तिकाएँ देखें: **"अन्य अन्य भाषाओँ में बोलने के अदभूत लाभ"**]

सब कुछ दूसरों की उन्नति के लिए करो (14:6-20)

6 इसलिये हे भाइयो, यदि मैं तुम्हारे पास आकर अन्य भाषाओं में बातें करूँ, और प्रकाश या ज्ञान या भविष्यद्वाणी या उपदेश की बातें तुम से न कहूँ, तो मुझ से तुम्हें क्या लाभ होगा?
7 इसी प्रकार यदि निर्जीव वस्तुएँ भी जिनसे ध्वनि निकलती है, जैसे बाँसुरी या बीन, यदि उनके स्वरों में भेद न हो तो जो फूँका या बजाया जाता है, वह कैसे पहिचाना जाएगा?
8 और यदि तुरही का शब्द साफ न हो, तो कौन लड़ाई के लिये तैयारी करेगा?
9 ऐसे ही तुम भी यदि जीभ से साफ–साफ बातें न कहो, तो जो कुछ कहा जाता है वह कैसे समझा जाएगा? तुम तो हवा से बातें करनेवाले ठहरोगे।
10 जगत में कितने ही प्रकार की भाषाएँ क्यों न हों, परन्तु उनमें से कोई भी बिना अर्थ की न होगी।
11 इसलिये यदि मैं किसी भाषा का अर्थ न समझूँ, तो बोलनेवाले की दृष्टि में परदेशी ठहरूँगा और बोलनेवाला मेरी दृष्टि में परदेशी ठहरेगा।
12 इसलिये तुम भी जब आत्मिक वरदानों की धुन में हो, तो ऐसा प्रयत्न करो कि तुम्हारे वरदानों की उन्नति से कलीसिया की उन्नति हो।
13 इस कारण जो अन्य भाषा बोले, वह प्रार्थना करे कि उसका अनुवाद भी कर सके।
14 इसलिये यदि मैं अन्य भाषा में प्रार्थना करूँ, तो मेरी आत्मा प्रार्थना करती है परन्तु मेरी बुद्धि काम नहीं देती।
15 अत: क्या करना चाहिए? मैं आत्मा से भी प्रार्थना करूँगा, और बुद्धि से भी प्रार्थना करूँगा; मैं आत्मा से गाऊँगा, और बुद्धि से भी गाऊँगा।
16 नहीं तो यदि तू आत्मा ही से धन्यवाद करेगा, तो फिर अज्ञानी तेरे धन्यवाद पर आमीन कैसे कहेगा? क्योंकि वह तो नहीं जानता कि तू क्या कहता है?
17 तू तो भली भाँति धन्यवाद करता है, परन्तु दूसरे की उन्नति नहीं होती।
18 मैं अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ, कि मैं तुम सबसे अधिक अन्य भाषाओं में बोलता हूँ।
19 परन्तु कलीसिया में अन्य भाषा में दस हज़ार बातें कहने से यह मुझे और भी अच्छा जान पड़ता है, कि दूसरों को सिखाने के लिये बुद्धि से पाँच ही बातें कहूँ।
20 हे भाइयो, तुम समझ में बालक न बनो: बुराई में तो बालक रहो, परन्तु समझ में सियाने बनो।

- ### वचन 6:

इसलिये हे भाइयो, यदि मैं तुम्हारे पास आकर अन्य भाषाओं में बातें करूँ, और प्रकाश या ज्ञान या भविष्यद्वाणी या उपदेश की बातें तुम से न कहूँ, तो मुझ से तुम्हें क्या लाभ होगा?

सभा में लोगों को लाभ पहुँचाने के लिए हमें इनमें से किसी एक के द्वारा बोलना आवश्यक है:
- प्रकाशन—ऐसे सत्य का प्रकट किया जाना जो अब तक लोगों को ज्ञात नहीं था
- ज्ञान—लोगों को आत्मिक सत्य प्रदान करना ताकि वे आत्मिक रूप से उन्नत हों
- भविष्यद्वाणी—दैवीय प्रेरणा के द्वारा बोलना
- शिक्षा—परमेश्वर के लोगों को सत्य की शिक्षा देना

- **वचन 7-11:**

जब तक सभा में कही गई बात समझ में न आए, तब तक वह लोगों के लिए लाभकारी नहीं होगी।

- **वचन 12:**

इसलिये तुम भी जब आत्मिक वरदानों की धुन में हो, तो ऐसा प्रयत्न करो कि तुम्हारे वरदानों की उन्नति से कलीसिया की उन्नति हो।

आत्मिक वरदानों के उपयोग में हमारा लक्ष्य परमेश्वर के लोगों की उन्नति (निर्माण) करना है, और इसलिए आत्मिक वरदानों का उपयोग इसी प्रेरणा के साथ किया जाना चाहिए।

ध्यान दीजिए, पौलुस उन्हें आत्मा के वरदानों के प्रति उत्साही न होने की शिक्षा नहीं दे रहा है। उनकी उत्सुकता को केवल सही दिशा में निर्देशित किया जाना चाहिए।

उत्साही (zealous)-यूनानी शब्द *'zēlōtēs'* - *'ज़ेलोटेस'*= जो जोश से जल रहा हो, अत्यन्त लालसा रखने वाला, किसी बात के लिए पूरे बल से संघर्ष करने वाला

- **वचन 13-15:**

13 इस कारण जो अन्य भाषा बोले, वह प्रार्थना करे कि उसका अनुवाद भी कर सके।
14 इसलिये यदि मैं अन्य भाषा में प्रार्थना करूँ, तो मेरी आत्मा प्रार्थना करती है परन्तु मेरी बुद्धि काम नहीं देती।
15 अत: क्या करना चाहिए? मैं आत्मा से भी प्रार्थना करूँगा, और बुद्धि से भी प्रार्थना करूँगा; मैं आत्मा से गाऊँगा, और बुद्धि से भी गाऊँगा।

जब हम अन्य भाषाओं में बोलते हैं, तो सभा को लाभ पहुँचाने का एकमात्र तरीका यह है कि जो कहा गया है उसका अर्थ भी बताया जाए।

जब हम अन्य भाषाओं में प्रार्थना करते हैं, तो पवित्र आत्मा से सामर्थ्य पाकर हमारी आत्मा प्रार्थना करती है, और हमारा मन उसमें सम्मिलित नहीं होता (वचन 14)।

हमें दोनों प्रकार से प्रार्थना करना और गाना सीखना चाहिए—आत्मा से भी और समझ से भी।

ध्यान दें कि यहाँ "आत्मा से प्रार्थना करना" या "आत्मा से गाना" शब्दों का उपयोग अन्य भाषाओं में प्रार्थना या गीत गाने के लिए किया गया है। [कुछ लोग "आत्मा से प्रार्थना करना" का अर्थ बहुत अधिक जोश, उत्साह या भावनाओं के साथ प्रार्थना करना समझते हैं। यह गलत व्याख्या है। नए नियम में जैसा "आत्मा से प्रार्थना करना" शब्द प्रयोग किया गया है, उसका सही अर्थ अन्य भाषाओं में प्रार्थना करना है।]

<u>पार्श्व टिप्पणी:</u> व्यक्तिगत उपयोग के लिए अन्य भाषाएँ और अर्थ बताना
जब आप अपनी व्यक्तिगत प्रार्थना के समय अन्य भाषाओं में प्रार्थना करते हैं, तो यह आवश्यक नहीं है कि आप हर बात का अर्थ बताएं। आप कई घंटों तक अन्य भाषाओं में प्रार्थना कर सकते हैं, आत्मिक

रूप से उन्नत और दृढ़ बन सकते हैं, बिना अर्थ बताए। व्यक्तिगत जीवन में अन्य भाषाएँ और उनका अर्थ बताना लाभकारी हो सकता है, क्योंकि इससे आपको यह समझ मिलती है कि आप क्या प्रार्थना कर रहे हैं। आप जो प्रार्थना कर रहे हैं उसका अर्थ आप या तो उसे बोलकर प्रकट करने के द्वारा प्राप्त कर सकते हैं, या केवल अपनी आत्मा में उसे ग्रहण करके, ताकि आप समझ सकें कि परमेश्वर का आत्मा क्या कह रहा है।

व्यक्तिगत उपयोग में, ऐसे कई क्षेत्र हैं जहाँ अन्य भाषाएँ और उनका अर्थ बताना लाभकारी हो सकता है:

(A) व्यक्तिगत मार्गदर्शन और दिशा के लिए, आपके व्यक्तिगत जीवन के लिए परमेश्वर की योजनाओं और उद्देश्यों को समझने में

(B) उन निर्णयों को लेने के लिए जिनकी ज़िम्मेदारी आप पर है (जैसे कार्यस्थल, व्यवसाय, सेवकाई, आदि)

(C) परमेश्वर की बातों में प्रकाशन और समझ के लिए, जैसे वचन की गहराइयों में अंतर्दृष्टि, पृथ्वी पर वर्तमान में परमेश्वर के कार्य करने के तरीकों की समझ, आदि

- **वचन 16-20:**

[16] नहीं तो यदि तू आत्मा ही से धन्यवाद करेगा, तो फिर अज्ञानी तेरे धन्यवाद पर आमीन कैसे कहेगा? क्योंकि वह तो नहीं जानता कि तू क्या कहता है?
[17] तू तो भली भाँति धन्यवाद करता है, परन्तु दूसरे की उन्नति नहीं होती।
[18] मैं अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ, कि मैं तुम सबसे अधिक अन्य भाषाओं में बोलता हूँ।
[19] परन्तु कलीसिया में अन्य भाषा में दस हज़ार बातें कहने से यह मुझे और भी अच्छा जान पड़ता है, कि दूसरों को सिखाने के लिये बुद्धि से पाँच ही बातें कहूँ।
[20] हे भाइयो, तुम समझ में बालक न बनो: बुराई में तो बालक रहो, परन्तु समझ में सियाने बनो।

हम अपनी अन्य भाषाओं की प्रार्थना को विशेष उद्देश्यों की ओर निर्देशित कर सकते हैं। प्रेरित पौलुस धन्यवाद देने का उदाहरण देते हैं (जैसे भोजन के लिए धन्यवाद करना)।

प्रेरित पौलुस के समान, हमें व्यक्तिगत रूप से बहुत अधिक अन्य भाषाओं में प्रार्थना करनी चाहिए (वचन 18)। परन्तु जब हम सार्वजनिक स्थान पर होते हैं, जैसे धन्यवाद देते समय या किसी सभा से बात करते समय, तो लोगों को ज्ञात भाषा में बोलना अन्य भाषाओं में बोलने से बेहतर है।

पौलुस हमें सार्वजनिक रूप से अन्य भाषाओं के उचित उपयोग को समझने में परिपक्व होने के लिए आमंत्रित करते हैं।

अविश्वासियों के लिए एक चिन्ह के रूप में अन्य भाषाएँ (14:21-22)

[21] व्यवस्था में लिखा है कि प्रभु कहता है, "मैं अपरिचित भाषा बोलनेवालों के द्वारा, और पराए मुख के द्वारा इन लोगों से बातें करूँगा तौभी वे मेरी न सुनेंगे।"
[22] इसलिये अन्य भाषाएँ विश्वासियों के लिये नहीं, परन्तु अविश्वासियों के लिये चिह्न हैं; और भविष्यद्वाणी अविश्वासियों के लिये नहीं, परन्तु विश्वासियों के लिये चिह्न हैं।

पवित्र आत्मा अविश्वासी के लिए चिन्ह के रूप में अन्य भाषाओं के उपयोग की प्रेरणा दे सकते हैं। पवित्र आत्मा से प्रेरित होकर अन्य भाषाओं में बोलने वाला व्यक्ति उस भाषा में बोल सकता है जिसे उद्धार न पाए हुए व्यक्ति समझता है, और प्रभु की ओर से एक संदेश देकर उसे यीशु मसीह की ओर इंगित कर सकता है। पिन्तेकुस्त के दिन जो हुआ, वह इसका एक उदाहरण है।

अविश्वासियों पर भविष्यद्वाणी का प्रभाव (14:23-25)

23 अत: यदि कलीसिया एक जगह इकट्ठी हो, और सब के सब अन्य भाषाएँ बोलें, और बाहरवाले या अविश्वासी लोग भीतर आ जाएँ तो क्या वे तुम्हें पागल न कहेंगे?
24 परन्तु यदि सब भविष्यद्वाणी करने लगें, और कोई अविश्वासी या बाहरवाला मनुष्य भीतर आ जाए, तो सब उसे दोषी ठहरा देंगे और परख लेंगे;
25 और उसके मन के भेद प्रगट हो जाएँगे, और तब वह मुँह के बल गिरकर परमेश्वर को दण्डवत् करेगा, और मान लेगा कि सचमुच परमेश्वर तुम्हारे बीच में है।

यद्यपि अन्य भाषाएँ मुख्य रूप से परमेश्वर से प्रार्थना करने का एक साधन हैं, फिर भी जैसा कि हमने पहले वचन 21-22 में देखा, अन्य भाषाएँ अविश्वासी के लिए एक चिन्ह के रूप में भी उपयोग की जा सकती हैं।

अन्य भाषाओं के उचित उपयोग में हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि जैसा वचन 23 में कहा गया है, जब हम सब इकट्ठे होकर अन्य भाषाओं में प्रार्थना करते हैं, तो यह संभव है कि जो अनजान हैं या अविश्वासी हैं, वे हमें पागल समझें। इसका यह अर्थ नहीं है कि जब हम एकत्र हों तो हमें अन्य भाषाओं में बोलना नहीं चाहिए। पौलुस बताता है कि इसे सही रीति से कैसे किया जाए।

परन्तु हमारा उद्देश्य यह होना चाहिए कि ऐसे तरीके खोजे जाएँ जिनके द्वारा अनजान या अविश्वासी लोगों की सेवकाई हो सके। यहीं पर भविष्यद्वाणी की भूमिका आती है—जब अविश्वासी के लिए चिन्ह के रूप में अन्य भाषाओं का कार्य (जैसा वचन 21-22 में दिया गया है) प्रकट रूप से नहीं हो रहा हो।

यद्यपि भविष्यद्वाणी विश्वासियों और स्थानीय कलीसिया की उन्नति के लिए होती है, फिर भी भविष्यद्वाणी अविश्वासी के जीवन को भी प्रभावित कर सकती है, क्योंकि यह उसके जीवन के गुप्त भेदों को प्रकट करती है (वचन 24-25)।

आत्मिक वरदानों के प्रयोग में व्यवस्था (14:26-33)

26 इसलिये हे भाइयो, क्या करना चाहिए? जब तुम इकट्ठे होते हो, तो हर एक के हृदय में भजन या उपदेश या अन्य भाषा या प्रकाश या अन्य भाषा का अर्थ बताना रहता है। सब कुछ आत्मिक उन्नति के लिये होना चाहिए।
27 यदि अन्य भाषा में बातें करनी हों तो दो या बहुत हो तो तीन जन बारी–बारी से बोलें, और एक व्यक्ति अनुवाद करे।
28 परन्तु यदि अनुवाद करनेवाला न हो, तो अन्य भाषा बोलनेवाला कलीसिया में शान्त रहे, और अपने मन से और परमेश्वर से बातें करे।
29 भविष्यद्वक्ताओं में से दो या तीन बोलें, और शेष लोग उनके वचन को परखें।
30 परन्तु यदि दूसरे पर जो बैठा है, कुछ ईश्वरीय प्रकाश हो तो पहला चुप हो जाए।

31 क्योंकि तुम सब एक एक कर के भविष्यद्वाणी कर सकते हो, ताकि सब सीखें और सब शान्ति पाएँ।
32 और भविष्यद्वक्ताओं की आत्मा भविष्यद्वक्ताओं के वश में है।
33 क्योंकि परमेश्वर गड़बड़ी का नहीं, परन्तु शान्ति का परमेश्वर है। जैसा पवित्र लोगों की सब कलीसियाओं में है।

"तो फिर क्या हुआ, हे भाइयों?" अर्थात, "तो फिर भाइयों, तुम्हें क्या करना चाहिए?"—या यहाँ यह बताया जा रहा है कि तुम्हें क्या करना चाहिए।

ये वचन स्पष्ट रूप से बताते हैं कि जब भी परमेश्वर के लोग एकत्र हों—चाहे छोटे समूह में (जैसे जीवन समूह) या बड़ी सभा में—आत्मिक वरदानों का उपयोग कैसे किया जाना चाहिए।

हमें इस बात पर विशेष ज़ोर देना चाहिए कि विश्वासियों की सभाएँ ऐसी ही होनी चाहिए—हर व्यक्ति किसी और को आत्मिक रूप से देने के लिए कुछ न कुछ लेकर आए (वचन 26)

सभाओं में अन्य भाषाओं और भविष्यद्वाणी के **सार्वजनिक** उपयोग के लिए बाइबल आधारित निर्देश:

- कलीसिया में अन्य भाषाओं में बोलना, यदि उसका अर्थ बताया जाए, तो सभा की उन्नति कर सकता है (1 कुरिन्थियों 14:5), और इसका वही लाभ हो सकता है जैसा भविष्यवाणी का होता है, जो उन्नति, उपदेश और शान्ति प्रदान करती है (1 कुरिन्थियों 14:3)। जो लोग सभा में अन्य भाषाओं में बोलते हैं, उन्हें अर्थ के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। अर्थ उसी व्यक्ति के द्वारा दिया जा सकता है जिसने अन्य भाषाओं में संदेश दिया हो, या किसी अन्य व्यक्ति के द्वारा भी दिया जा सकता है (1 कुरिन्थियों 14:5,12,13)। किसी भी समय, अधिक से अधिक तीन व्यक्ति ही आगे आकर अर्थ सहित अन्य भाषाओं में संदेश दें। (फिर इसके बाद एक और समूह के तीन व्यक्ति अर्थ सहित अन्य भाषाओं में संदेश दे सकते हैं, और इसी प्रकार आगे—यह भविष्यद्वाणी के अभ्यास के लिए दिए गए समान निर्देशों के आधार पर समझा गया है।)

- इसी प्रकार, यदि सभा में भविष्यद्वाणियाँ लाई जा रही हों, तो किसी भी समय अधिक से अधिक तीन लोग बारी-बारी से आगे आकर भविष्यद्वाणी करें। जब एक बोल रहा हो, तो अन्य जाँच करें। इसके बाद तीन लोगों का एक और समूह आगे आकर भविष्यद्वाणी कर सकता है, और जब एक बोल रहा हो, तो अन्य चुप रहें और जाँच करें। इस प्रकार सब बारी-बारी से भविष्यद्वाणी कर सकते हैं, और अन्य लोग जाँच करते रहें।

यहाँ कुछ बातों पर ध्यान दें:

- प्रत्येक भविष्यद्वाणी की जाँच की जानी चाहिए। इसका अर्थ यह है कि यदि कही गई किसी बात में कुछ गलत हो, तो उसे त्याग दिया जाना चाहिए।
- भविष्यद्वक्ता की आत्मा भविष्यद्वक्ता के अधीन होती है (उसके नियंत्रण में)। इसलिए हम पवित्र आत्मा के साथ सहयोग में कार्य करते हैं, और इस पर नियंत्रण रखते हैं कि भविष्यद्वाणी कब और कैसे प्रकट की जाए।

सब कुछ व्यवस्था के साथ किया जाना चाहिए।

यही वह निर्देश है जो पौलुस ने सभी कलीसियाओं में दिया—जिससे यह स्पष्ट होता है कि प्रेरितों के काम की पुस्तक के समय स्थानीय कलीसियाओं में आत्मिक वरदान एक अभिन्न भाग थे।

स्त्रियाँ चुप रहें (14:34,35)

34 स्त्रियाँ कलीसिया की सभा में चुप रहें, क्योंकि उन्हें बातें करने की आज्ञा नहीं, परन्तु अधीन रहने की आज्ञा है, जैसा व्यवस्था में लिखा भी है।
35 यदि वे कुछ सीखना चाहें, तो घर में अपने अपने पति से पूछें, क्योंकि स्त्री का कलीसिया में बातें करना लज्जा की बात है।

इससे पहले 1 कुरिन्थियों 11:5 में पौलुस यह संकेत दे चुके हैं कि स्त्रियाँ कलीसिया की सभाओं में सार्वजनिक रूप से प्रार्थना या भविष्यद्वाणी कर सकती हैं।

साथ ही, 1 कुरिन्थियों 14:1 के अनुसार, स्त्रियों सहित सभी को प्रेम में चलना है, आत्मिक वरदानों की लालसा रखनी है, और विशेषकर भविष्यद्वाणी करनी है।

इन वचनों (वचन 34,35) की हमारी व्याख्या उस संदर्भ के अनुरूप होनी चाहिए जिसमें ये लिखे गए थे, और सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र के साथ भी संगत होनी चाहिए।

1 कुरिन्थियों 14 का मुख्य उद्देश्य यह है कि कलीसिया की सभाओं में आत्मिक वरदानों के उपयोग को प्रोत्साहित किया जाए, परन्तु अभिव्यक्ति में व्यवस्था और मर्यादा बनी रहे।

स्त्रियाँ-यूनानी शब्द *'gunē' - 'गुने'* = एक स्त्री, एक पत्नी

यहाँ पौलुस विशेष रूप से विवाहित स्त्रियों की बात कर रहे हैं, क्योंकि वह यह उल्लेख करते हैं कि उन्हें घर पर अपने-अपने पतियों से पूछना चाहिए। इसलिए वचन 34-35 सभी स्त्रियों के लिए सामान्य रूप से नहीं, बल्कि विशेष रूप से विवाहित स्त्रियों के लिए हैं।

यहाँ विषय उनके प्रचार करने या भविष्यद्वाणी करने का नहीं है, बल्कि जैसा कि पाठ में स्पष्ट रूप से कहा गया है: **"यदि वे कुछ सीखना चाहें, तो घर पर अपने-अपने पतियों से पूछें।"** यह उस स्थिति से संबंधित है जब पत्नी कुछ सीखना चाहती है और उस विषय में अपने पति से प्रश्न पूछने के लिए बोलती है। इसी संदर्भ में प्रेरित पौलुस उन्हें "चुप रहने" की शिक्षा देता है। वे ऐसा अपने पतियों के प्रति स्वेच्छा से अधीन रहने के द्वारा करती हैं, जैसा कि पुराने नियम के पवित्रशास्त्रों में सिखाया गया है।

यदि हम उस समय की प्रचलित संस्कृति को भी ध्यान में रखें, तो हम यह समझ सकते हैं कि स्थिति कैसी रही होगी। आम तौर पर उन संस्कृतियों में, और यहूदी आराधनालयों में भी, पुरुष और स्त्रियाँ सभागृह के अलग-अलग भागों में बैठते थे। यदि कोई पत्नी किसी बात को समझने के लिए अपने पति से प्रश्न पूछना चाहती, और वह सभागृह के दूसरे भाग में बैठा होता, तो उसका ऊँचे स्वर में पुकारना सभी के लिए विघ्न उत्पन्न करता। इसी कारण हम स्पष्ट रूप से देख सकते हैं कि प्रेरित पौलुस उन्हें चुप (शान्त) रहने और अपने प्रश्न घर पर पूछने का निर्देश क्यों देते हैं।

"**...जैसा कि व्यवस्था भी कहती है**"—यह उत्पत्ति 3:16 की ओर संकेत करता है: *"...तेरी लालसा तेरे पति की ओर होगी, और वह तुझ पर प्रभुता करेगा।"*

इस अध्याय में पौलुस तीन भिन्न परिस्थितियों के संदर्भ में *"चुप रहने"* की आज्ञा देते हैं: अन्य भाषाओं में बोलना, भविष्यद्वाणी, और स्त्रियों का प्रश्न पूछना।

- यदि कलीसिया में अन्य भाषाओं में बोलना हो, तो तभी बोलें जब कोई अर्थ बताने वाला भी हो; अन्यथा *"चुप रहें"* (1 कुरिन्थियों 14:27, 28)
- भविष्यद्वाणी बारी-बारी से करें; जब आप अपनी भविष्यद्वाणी दे चुके हों और किसी और को भविष्यद्वाणी की प्रेरणा मिले, तो *"चुप रहें"* (1 कुरिन्थियों 14:29, 30)
- स्त्रियाँ, यदि आपके मन में प्रश्न हों, तो कलीसिया में *"चुप रहें"* और बाद में घर पर अपने पति से पूछें (1 कुरिन्थियों 14:34,35)

यहाँ उद्देश्य व्यवस्था है, न कि आत्मिक वरदानों के प्रयोग को रोकना। हम *"चुप रहने"* की आज्ञा का उपयोग अन्य भाषाओं में बोलने या भविष्यद्वाणी को रोकने के लिए नहीं करते। तो फिर इसी आज्ञा का उपयोग करके स्त्रियों को कलीसिया में प्रचार करने से क्यों रोका जाए? इस वचन का सही अर्थ यह है कि यदि किसी पत्नी के मन में प्रश्न हों, तो उसे कलीसिया की सभा के दौरान नहीं, बल्कि उचित समय पर (घर पर अपने पति के साथ) उन्हें पूछना चाहिए।

[स्त्रियों की सेवकाई पर और टिप्पणियों के लिए APC-ए.पी.सी. की निःशुल्क पुस्तक: **"परमेश्वर का भवन"** का अध्याय 22 देखें]

सब कुछ शालीनता और व्यवस्थित रूप से की जाएँ (14:36-40)

36 क्या परमेश्वर का वचन तुम में से निकला है? या केवल तुम ही तक पहुँचा है?
37 यदि कोई मनुष्य अपने आप को भविष्यद्वक्ता या आत्मिक जन समझे, तो यह जान ले कि जो बातें मैं तुम्हें लिखता हूँ, वे प्रभु की आज्ञाएँ हैं।
38 परन्तु यदि कोई यह न माने, तो उसको भी न मानो।
39 अत: हे भाइयो, भविष्यद्वाणी करने की धुन में रहो और अन्य भाषा बोलने से मना न करो;
40 पर सारी बातें शालीनता और व्यवस्थित रूप से की जाएँ।

आत्मिक वरदानों के उचित प्रयोग के विषय में प्रेरित ने यहाँ जो कुछ कहा है, वे सब प्रभु की आज्ञाएँ हैं। इससे हम परमेश्वर के हृदय को देखते हैं कि वह अपने लोगों के बीच शालीनता और व्यवस्था चाहता है।

- **वचन 40:**

पर सारी बातें शालीनता और व्यवस्थित रूप से की जाएँ।

पवित्र आत्मा के सभी वरदान—जिनमें भविष्यद्वाणी और विभिन्न अन्य भाषाओं का वरदान भी सम्मिलित है—आत्मा के अद्भुत वरदान हैं, और सभी विश्वासियों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए कि ये उनके जीवन में सक्रिय रूप से कार्य करें।

लाइफ़ ग्रुप अध्ययन मार्गदर्शिका

रविवार, 17 नवम्बर 2019
1 कुरिन्थियों अध्याय 14

यह लाइफ ग्रुप चर्चाओं में उपयोग के लिए एक सरल मार्गदर्शिका है। हमारा उद्देश्य रविवार के संदेश के अनुप्रयोग पर ध्यान केंद्रित करना है—कि कैसे प्रत्येक व्यक्ति वचन का करने वाला बन रहा है और अपने जीवन को परमेश्वर के पवित्र वचन पर बना रहा है। लाइफ ग्रुप की सभा सामान्यतः 2 घंटे की होती है। प्रत्येक लाइफ ग्रुप में लगभग 12-15 लोग होते हैं।

तैयारी
लाइफ ग्रुप बैठक की तैयारी के लिए, आप Sermon Key Points (पाँच मिनट में संदेश का सार) या पूरा रविवार का संदेश सुन सकते हैं। आप रविवार के संदेश के नोट्स भी देख सकते हैं। यह सभी "All Peoples Church Bangalore-ऑल पीपल्स चर्च बैंगलोर" मोबाइल ऐप में या ऑनलाइन **apcwo.org/sermons** पर उपलब्ध हैं। लाइफ ग्रुप बैठक के लिए प्रार्थना करें और पवित्र आत्मा के कार्य और सेवकाई को आमंत्रित करें।

स्वागत
लाइफ ग्रुप बैठक की शुरुआत प्रार्थना, आराधना और किसी मनोरंजक गतिविधि के समय से हो सकती है।

परमेश्वर के वचन को सुनें
निम्नलिखित शास्त्र खंड पढ़ें: *1 कुरिन्थियों अध्याय 14*

मिलकर परमेश्वर के वचन की जाँच करें
कृपया इनमें से कुछ प्रश्नों पर मिलकर चर्चा करें, और लोगों को अपनी समझ साझा करने का अवसर दें। हम प्रत्येक व्यक्ति को प्रोत्साहित करते हैं कि समूह चर्चा के दौरान अपने व्यक्तिगत सीख को लिख लें।

1. *यीशु चाहते हैं कि सभी विश्वासी प्रेम में चलें, आत्मिक वरदानों की लालसा रखें, और विशेषकर भविष्यद्वाणी करें। कल्पना करने का प्रयास करें और वर्णन करें कि एक स्थानीय कलीसिया कैसी दिखेगी जहाँ सभी विश्वासी पवित्र आत्मा के सभी वरदानों में सक्रिय रूप से कार्य कर रहे हों। ऐसे विश्वासियों के एकत्र होने पर छोटे समूह की सभाएं कैसी दिखेंगी? जब ऐसे विश्वासी बड़ी कलीसिया की सभा में एकत्र हों, तो वह सभा कैसी दिखेगी?*

2. *आपके विचार में हमारी स्थानीय कलीसिया को ऐसी कलीसिया बनने के लिए क्या आवश्यक है, जहाँ सभी विश्वासी पवित्र आत्मा के सभी वरदानों में सक्रिय रूप से कार्य कर रहे हों?*

यदि समय अनुमति दे, तो प्रत्येक व्यक्ति कुछ मिनट (अधिकतम तीन मिनट) लेकर एक या दो मुख्य सीख साझा करे और यह बताए कि वे इसे अपने विशिष्ट जीवन परिस्थितियों में कैसे लागू होते हुए देखते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को भाग लेने और साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

अपने जीवन और आत्मिक यात्रा को साझा करते हुए संगति करें

प्रत्येक व्यक्ति कुछ मिनट (अधिकतम 3 मिनट) लेकर परमेश्वर के साथ अपने जीवन से संबंधित कुछ भी साझा करे—जो कुछ परमेश्वर उन्हें सिखा रहा है, प्रार्थना के उत्तर की कोई गवाही, या कोई विशेष चुनौती जिसके लिए वे प्रार्थना चाहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को भाग लेने और साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

एक-दूसरे को प्रोत्साहित करें—प्रार्थना और सेवकाई के द्वारा

दो या तीन लोगों के छोटे समूहों में बँट जाएँ और बारी-बारी से आज जो सीखा गया है उसके प्रकाश में परमेश्वर को धन्यवाद दें और एक-दूसरे के लिए प्रार्थना करें। पवित्र आत्मा की अगुवाई सुनें। पवित्र आत्मा के वरदानों के बहने की अपेक्षा रखें—चंगाई, चमत्कारों की रिहाई, भविष्यवाणी आदि के द्वारा।

पुनः एकत्रित हों और इन विषयों के लिए मिलकर प्रार्थना करें:

1. *परिवारों की सुरक्षा और सुदृढ़ता के लिए*
2. *कलीसिया के रूप में हम पर परमेश्वर के पवित्र आत्मा का एक शक्तिशाली उंडेलाव हो, और हमारे द्वारा हमारे नगर और राष्ट्र में बहुतों को आशीष मिले। केवल परमेश्वर के आत्मा का सामर्थी कार्य ही हमारे नगर और राष्ट्र को बदल सकता है।*
3. *BUILD TO IMPACT (प्रभाव के लिए निर्माण करें) परियोजना के लिए—भूमि की खोज और अधिग्रहण की प्रक्रिया में परमेश्वर के हाथ की अगुवाई के लिए, और इस परियोजना को पूरा करने के लिए पर्याप्त से भी अधिक वित्तीय प्रावधान के लिए।*

अंत में मिलकर परमेश्वर को धन्यवाद देते हुए समाप्त करें।

उपयोगी संसाधन

हर रविवार सुबह 10:30 बजे (भारतीय समय, GMT+5:30) हमारी ऑनलाइन संडे चर्च सेवा का लाइव प्रसारण देखें। पवित्र आत्मा से परिपूर्ण, अभिषिक्त आराधना, वचन और चंगाई, चमत्कार तथा छुटकारे की सेवा।

यूट्यूब: https://youtube.com/allpeopleschurchbangalore
वेबसाइट: https://apcwo.org/live

हमारी अन्य वेबसाइट्स और निःशुल्क संसाधन:
चर्च: https://apcwo.org
निःशुल्क संदेश: https://apcwo.org/resources/sermons
निःशुल्क पुस्तकें: https://apcwo.org/books/english
दैनिक भक्ति-वचन: https://apcwo.org/resources/daily-devotional
यीशु मसीह: https://examiningjesus.com
बाइबल कॉलेज: https://apcbiblecollege.org
ई-लर्निंग: https://apcbiblecollege.org/elearn
वीकेंड स्कूल्स: https://apcwo.org/ministries/weekend-schools
काउंसलिंग: https://chrysalislife.org
संगीत: https://apcmusic.org
मिनिस्टर्स फेलोशिप: https://pamfi.org
चर्च ऐप: https://apcwo.org/app
चर्चेस: https://apcwo.org/ministries/churches
विश्व मिशन: https://apcworldmissions.org